बहुत ज़्यादा शोर!

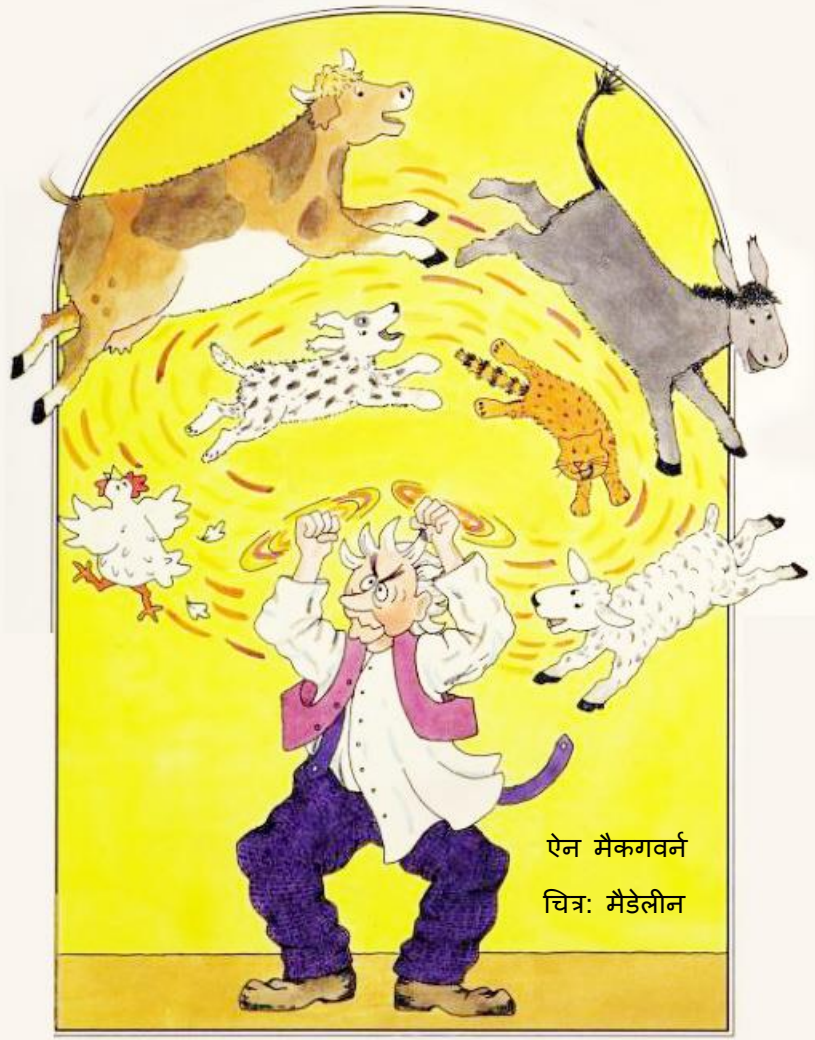

ऐन मैकगवर्न

चित्र: मैडेलीन

बहुत ज़्यादा शोर!

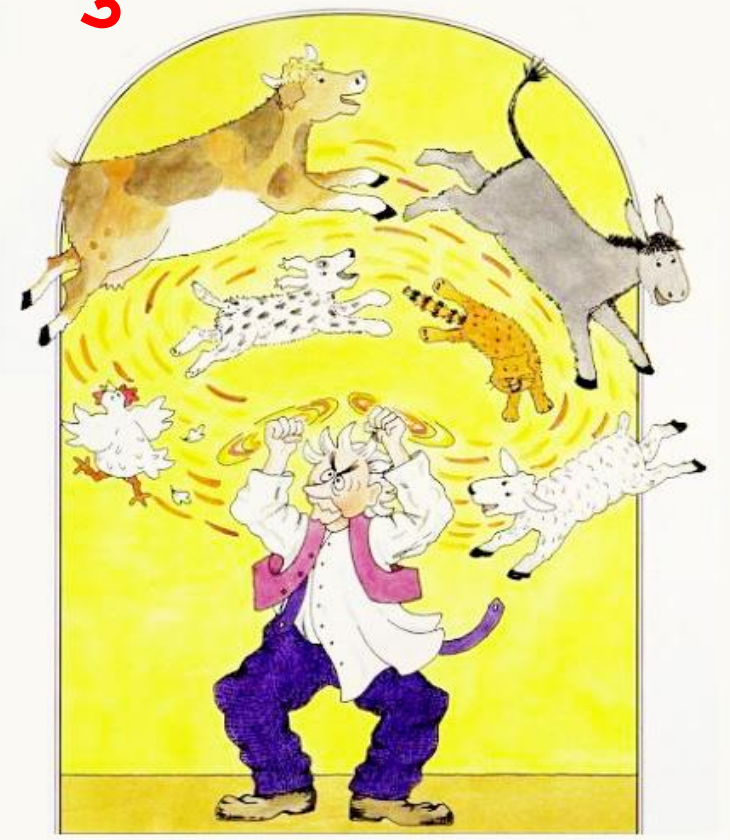

ऐन मैकगवर्न

चित्र: मैडेलीन

बहुत समय पहले एक बूढ़ा आदमी था.
उसका नाम पीटर था,
और वो एक पुराने घर में रहता था.

उसका पलंग चरमराता था.
उसके फर्श के तख़्तों से आवाज़ आती थी.
उसकी छत पर पत्ते गिरते थे – छपाक! छपाक!
उसकी चाय की केतली सूं-सूं करके सीटी बजाती थी.
"यहाँ पर बहुत शोर है," पीटर ने कहा.

फिर पीटर गाँव की सबसे बुद्धिमान महिला से मिलने गया.

"मैं क्या करूं?" पीटर ने बुद्धिमान महिला से पूछा.

"मेरा पलंग चरमता है.

मेरे फर्श के तख़्तों से आवाज़ आती है.

मेरी छत पर पत्ते गिरते हैं - छपाक! छपाक!

और मेरी चाय की केतली सूं-सूं सीटी बजाती है."

"मैं तुम्हारी मदद ज़रूर करूंगी," बुद्धिमान महिला ने कहा.

"मुझे पता है कि तुम्हें क्या करना चाहिए."

"क्या?" पीटर ने पूछा.

"तुम एक गाय ले आओ," बुद्धिमान महिला ने कहा.

"गाय लाने से मेरा क्या भला होगा?" पीटर ने पूछा.

लेकिन फिर भी पीटर एक गाय लेकर आया.

गाय रम्भाई!

उसका पलंग चरमराया.

उसके फर्श के तख़्तों से आवाज़ आई.

उसकी छत पर पत्ते गिरे - छपाक! छपाक!

उसकी चाय की केतली ने सूं-सूं सीटी बजाई.

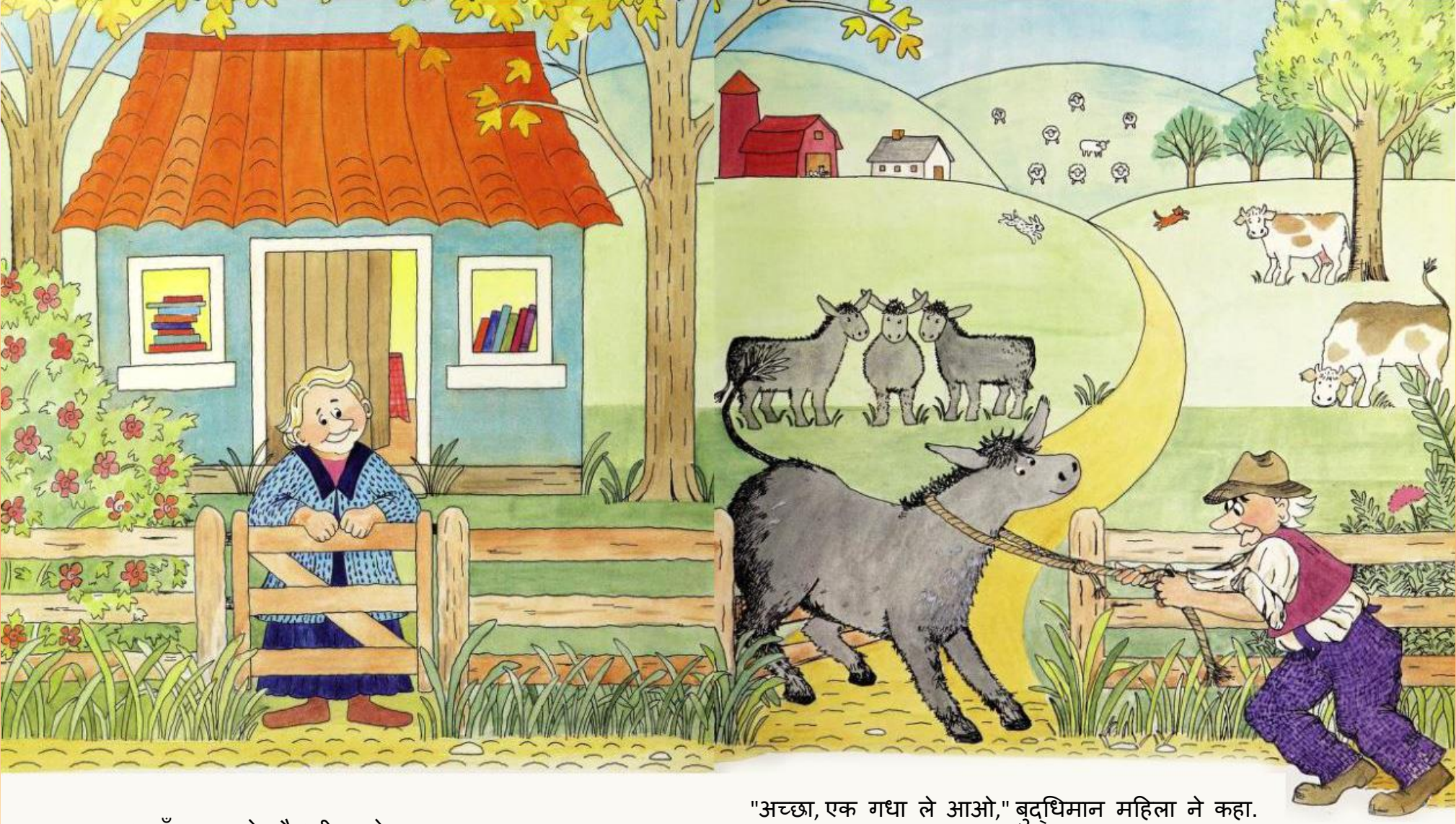

"यहाँ बहुत शोर है," पीटर ने कहा.

फिर वो बुद्धिमान महिला के पास वापस लौटा.

"अच्छा, एक गधा ले आओ," बुद्धिमान महिला ने कहा.

"गधे से मेरा क्या भला होगा?" पीटर ने पूछा .

लेकिन फिर भी पीटर एक गधा ले आया.

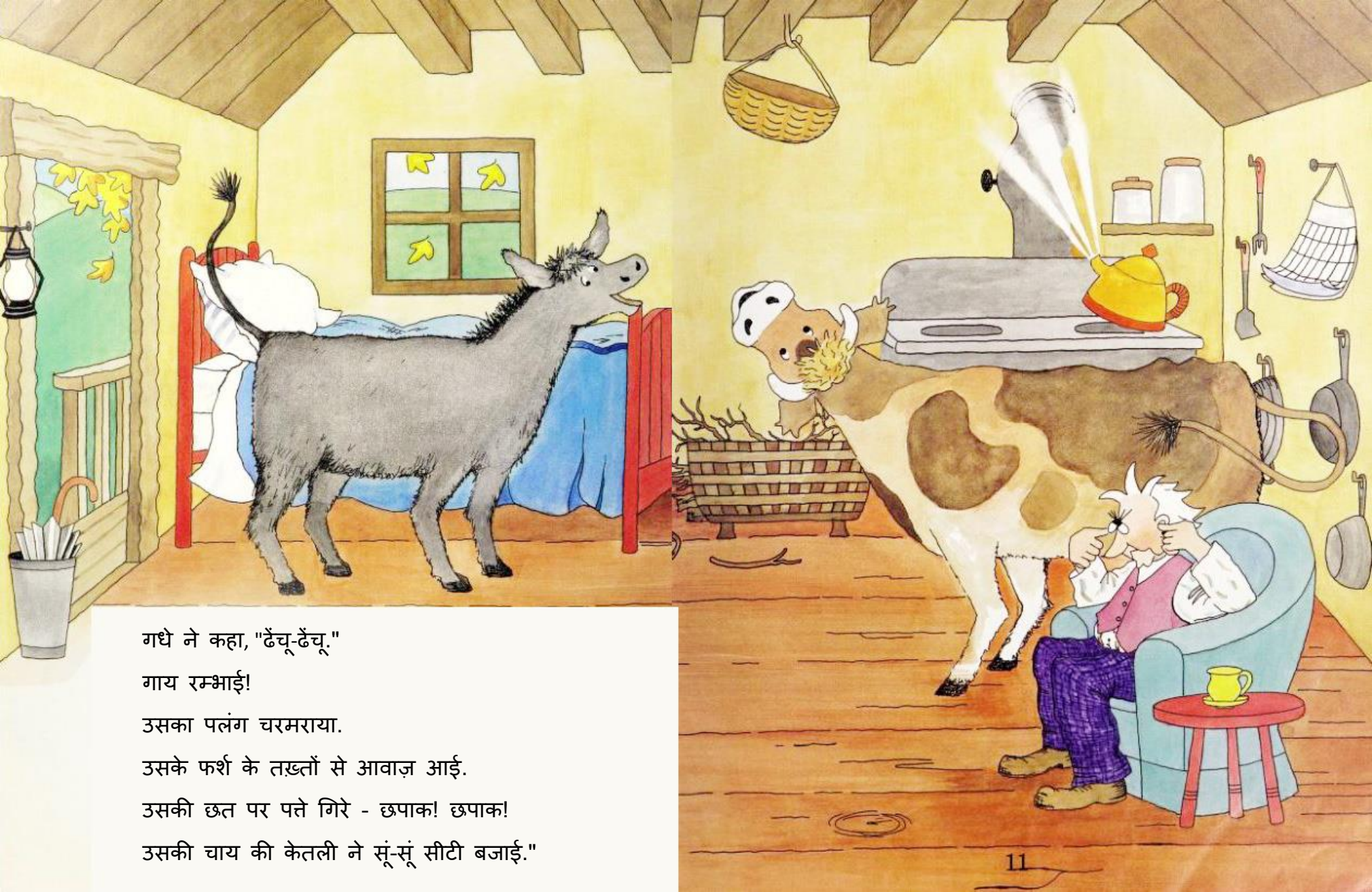

गधे ने कहा, "ढैंचू-ढैंचू."

गाय रम्भाई!

उसका पलंग चरमराया.

उसके फर्श के तख़्तों से आवाज़ आई.

उसकी छत पर पत्ते गिरे - छपाक! छपाक!

उसकी चाय की केतली ने सूं-सूं सीटी बजाई."

"अभी भी बहुत शोर है," पीटर ने कहा.

और वो फिर बुद्धिमान महिला के पास लौटा.

"अच्छा, एक भेड़ ले आओ," बुद्धिमान महिला ने कहा.

"भेड़ से मेरा क्या भला होगा?" पीटर ने पूछा.

लेकिन पीटर किसी तरह एक भेड़ ले आया.

भेड़ मिमियाई!
गधे ने कहा, "ढेंचू-ढेंचू!"
गाय रम्भाई!
उसका पलंग चरमराया.
उसके फर्श के तख़्तों से आवाज़ आई.
उसकी छत पर पत्ते गिरे - छपाक! छपाक!
उसकी चाय की केतली ने सूं-सूं सीटी बजाई.

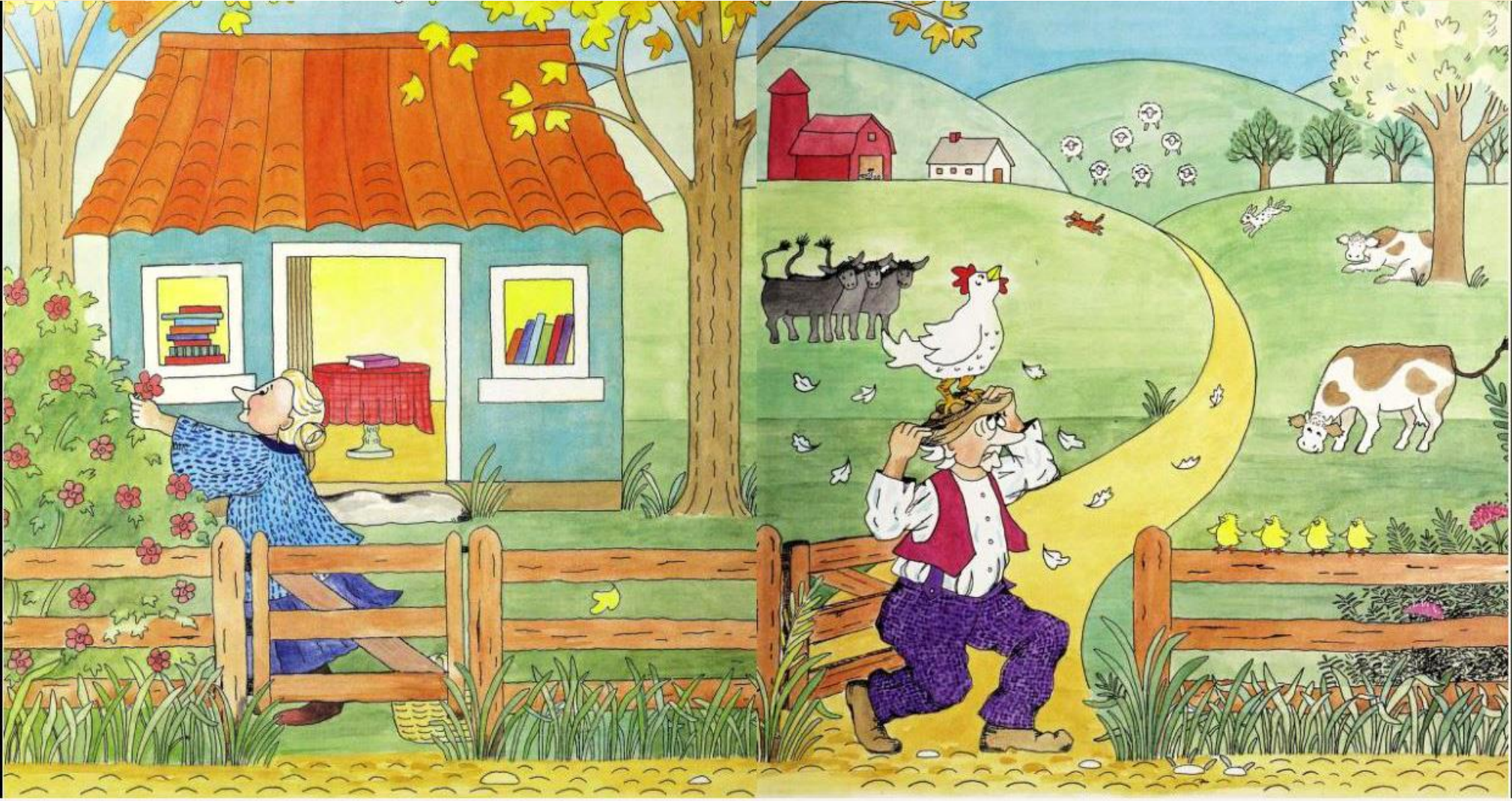

"घर में बहुत शोरगुल है," पीटर ने कहा.

और वो बुद्धिमान महिला के पास वापस लौटा.

"अच्छा, एक मुर्गी ले आओ," बुद्धिमान महिला ने कहा.

"मुर्गी से मेरा क्या भला होगा?" पीटर ने पूछा.

लेकिन पीटर कहीं से एक मुर्गी ले आया.

मुर्गी ने कहा, "कुकड़ूं-कूँ!"
भेड़ मिमियाई!
गधे ने कहा, "ढेंचू-ढेंचू!"
गाय रम्भाई!
उसका पलंग चरमराया.
उसके फर्श के तख़्तों से आवाज़ आई.
उसकी छत पर पत्ते गिरे - छपाक! छपाक!
उसकी चाय की केतली ने सूं-सूं सीटी बजाई.

"भयानक शोर है," पीटर ने कहा.

और फिर वो वापस उस बुद्धिमान महिला के पास गया.

"अच्छा, एक कुत्ता ले आओ," बुद्धिमान महिला ने कहा.

"और साथ में एक बिल्ली भी."

"कुत्ते से मेरा क्या भला होगा?" पीटर ने कहा.

"या फिर बिल्ली से?"

लेकिन पीटर को किसी तरह एक कुत्ता और एक बिल्ली मिल गई.

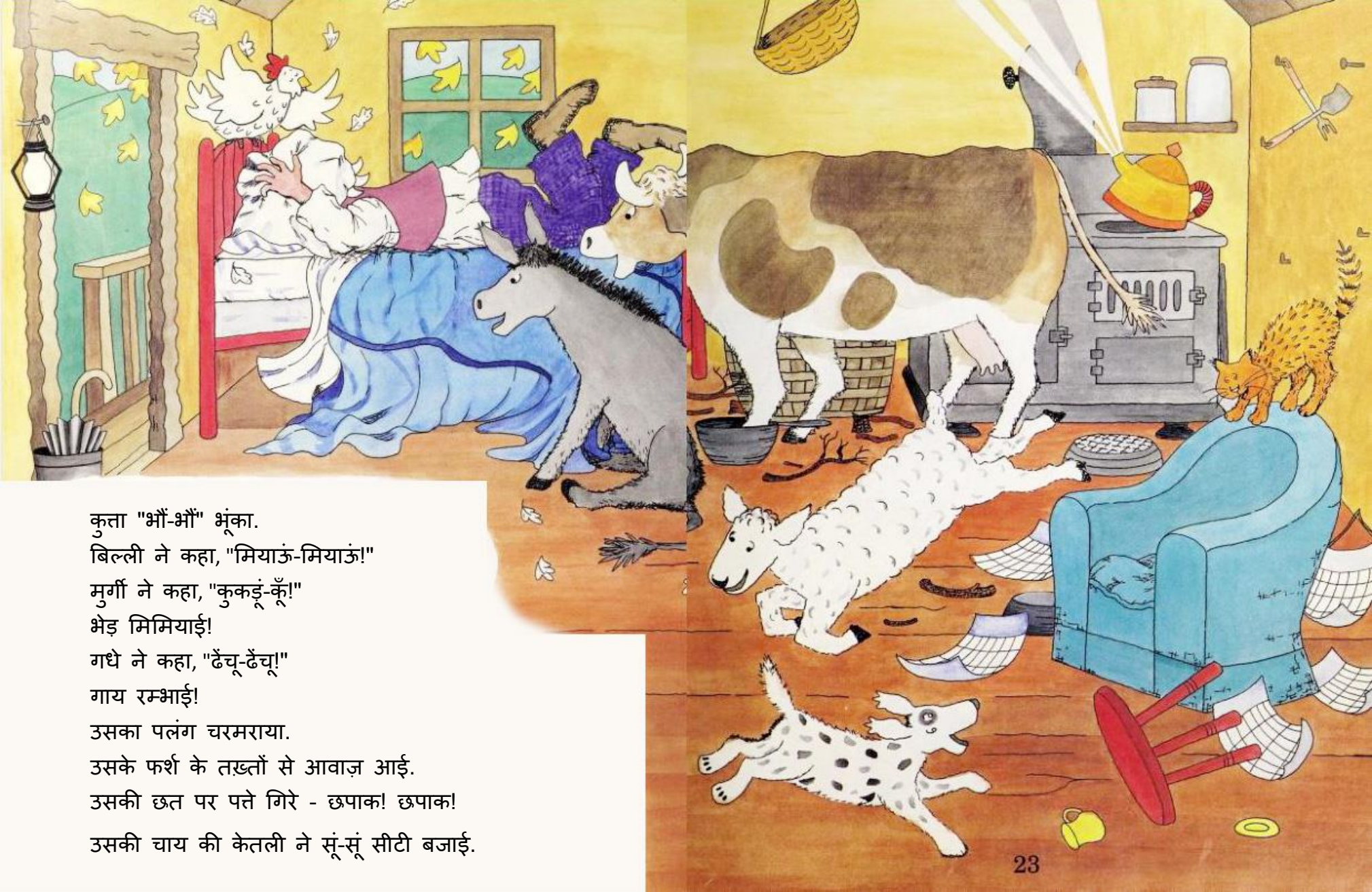

कुत्ता "भौं-भौं" भूंका.
बिल्ली ने कहा, "मियाऊं-मियाऊं!"
मुर्गी ने कहा, "कुकडूं-कूँ!"
भेड़ मिमियाई!
गधे ने कहा, "ढैंचू-ढैंचू!"
गाय रम्भाई!
उसका पलंग चरमराया.
उसके फर्श के तख़्तों से आवाज़ आई.
उसकी छत पर पत्ते गिरे - छपाक! छपाक!
उसकी चाय की केतली ने सूं-सूं सीटी बजाई.

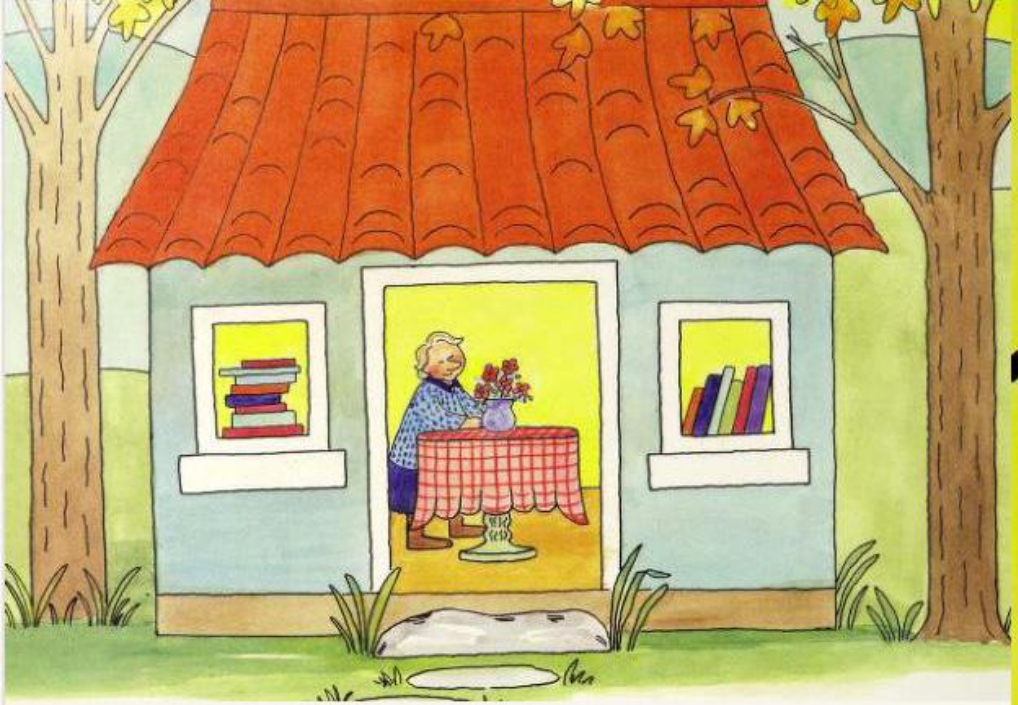

फिर पीटर को बड़ा गुस्सा आया.
वो बुद्धिमान महिला के पास वापिस गया.
"मैंने आपसे कहा था कि मेरे घर में बहुत शोर है," पीटर ने कहा.
"पूरे दिन गाय रंभाती है,
पूरे दिन गधा ढेंचू-ढेंचू करता है,
पूरे दिन भेड़ मिमियाती है,
पूरे दिन मुर्गी कुकड़ूं-कूँ करती है,
पूरे दिन कुत्ता भौंकता है,
पूरे दिन बिल्ली मियाऊं-मियाऊं करती है,
मैं एकदम पागल हो गया हूँ," पीटर ने कहा.

फिर उस बुद्धिमान महिला ने कहा.
"मैं तुमसे जो कहूँ वही करो.
अब गाय को जाने दो.
गधे को जाने दो.
भेड़ को जाने दो.
मुर्गी को जाने दो.
कुत्ते को जाने दो.
बिल्ली को भी जाने दो."

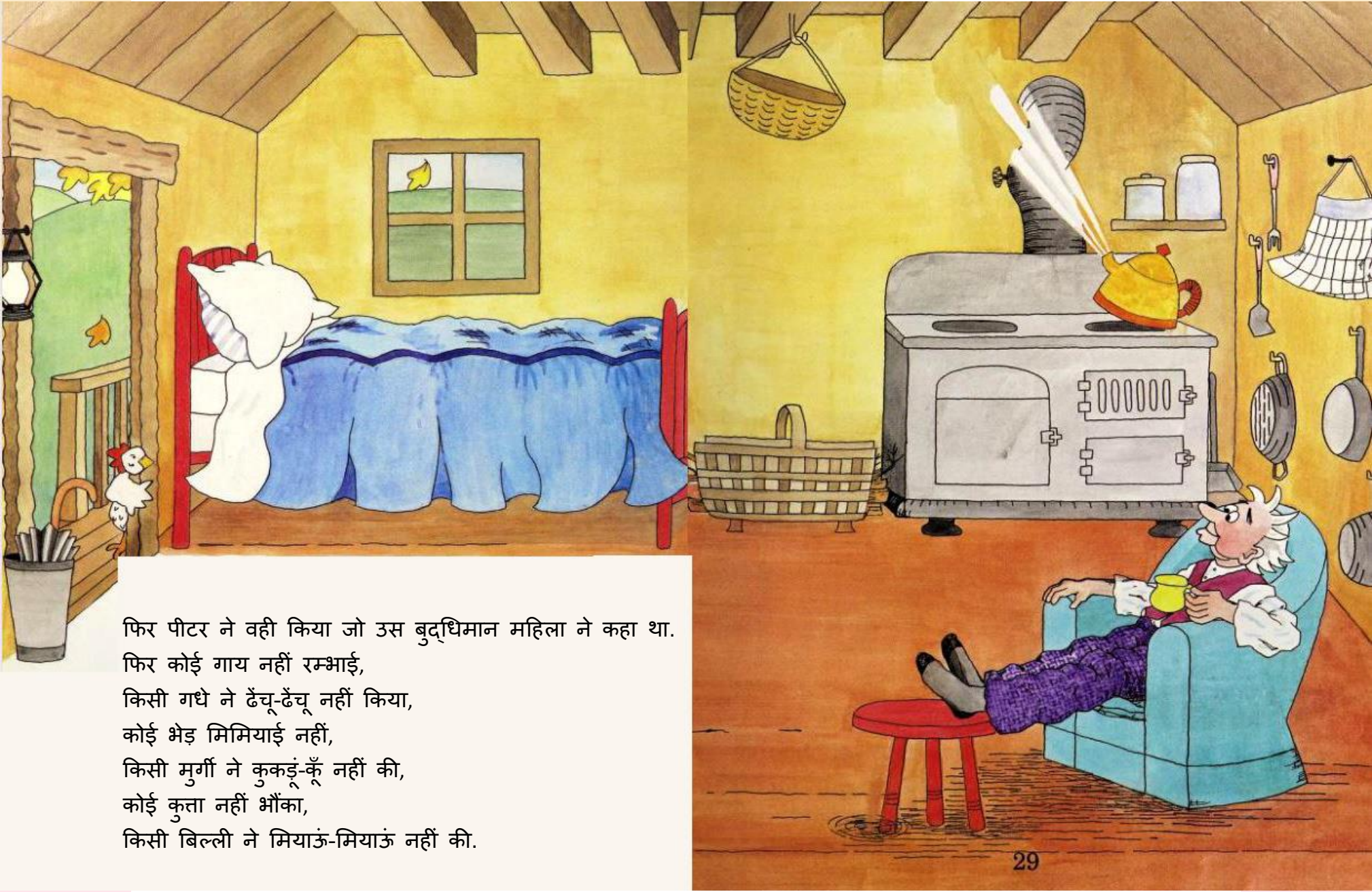

फिर पीटर ने वही किया जो उस बुद्धिमान महिला ने कहा था.
फिर कोई गाय नहीं रम्भाई,
किसी गधे ने ढेंचू-ढेंचू नहीं किया,
कोई भेड़ मिमियाई नहीं,
किसी मुर्गी ने कुकड़ूं-कूँ नहीं की,
कोई कुत्ता नहीं भौंका,
किसी बिल्ली ने मियाऊं-मियाऊं नहीं की.

पीटर का पलंग चरमराया.

"आह," पीटर ने कहा. "वो कितना शांत शोर है."

घर के फर्श के तख्तों ने आवाज़ की.

"ओह," पीटर ने कहा. "वो कितना शांत शोर है."

बाहर छत पर पत्ते गिरे - छपाक! छपाक!

चाय की केतली ने सूं-सूं सीटी बजाई.

"अरे वाह," पीटर ने कहा. "मेरा घर कितना शांत है."

समाप्त

और फिर पीटर अपने पलंग पर जाकर सो गया
और उसने एक बहुत ही शांत सपना देखा.